|b09291 41eyrinF (English)

|c09291_000_41eyrin.xml (Task 178178)

|v1

रविवार का प्रातःकालीन सत्र

|v2

जनरल सम्मेलन

|v3

रविवार का प्रातःकालीन सत्र

|v4

3 अक्टूबर 2010

|v5

परमेश्वर में विश्वास रखो, फिर जाओ और कार्य करो

|v6

विश्वास

|v7

आज्ञाकारिता

|v8

भविष्यवक्ताओं

|v9

आशीषें

|v10

जनरल सम्मेलन

|v11

परमेश्वर में विश्वास रखो, फिर जाओ और कार्य करो

|v12

अध्यक्ष हेनरी बी. आइरिंग द्वारा

|v13

प्रथम अध्यक्षता में प्रथम सलाहकार

|v14

आप उसमें अपना विश्वास प्रकट करते हैं जब आप सीखने और पश्चाताप करने की इच्छा से सुनते हैं और फिर आप जाकर वैसा ही करते हैं जैसा वह कहता है ।

|v15

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, आज सब्त के दिन आपसे बातें करना एक सम्मान की बात है । करोड़ों अन्तिम-दिनों के सन्तों और मित्रों से बात करने के मौके से मैं विनम्र हुआ हूं । इस पवित्र मौके की तैयारी के लिए, मैंने आपकी व्यक्तिगत जरूरतों के लिए और प्रभु मुझसे जो संदेश दिलवाना चाहता है उसके विषय में प्रार्थना और मनन किया था ।

|v16

आपकी जरूरतें महान और भिन्न हैं । आप में से प्रत्येक परमेश्वर का विशेष बच्चा है । परमेश्वर आपको व्यक्तिगत रूप से जानता है । वह प्रोत्साहन, सुधार, और निर्देशन के लिए आप और आपकी जरूरतों के अनुसार अपने संदेशों को भेजता है ।

|v17

इस सम्मेलन में परमेश्वर मुझसे जो कहलवाना चाहता है उसे जानने के लिए, मैंने धर्मशास्त्र और पिछले सम्मेलन में उसके सेवकों के संदेशों को पढ़ा थ ा । मुझे आपनी प्रार्थना का उत्तर मिला जब मैंने मॉरमन की पुस्तक में प्रभु के महान सेवक, अलमा के शब्दों को पढ़ा :

|v18

''ओह ! अगर मैं स्वर्गदूत होता, और अपने हृदय की इच्छा पूरी कर सकता, तब मैं परमेश्वर की तुरही के समान अपने शब्दों से, पृथ्वी को कम्पायमान करते हुए, सब लोगों को पश्चताप करने को कहता !

|v19

''हां, मेघगर्जन के सदृश्य शब्दों में, हर एक मनुष्य को पश्चताप और मुक्ति की योजना की मैं घोषणा करते हुए, यह कहूंगा कि उन्हें पश्चताप करना

और हमारे परमेश्वर के पास आना चाहिए, जिससे कि इस सारे जगत के ऊपर कष्ट न हो ।

|v20

''लेकिन सुनो, मैं एक मनुष्य हूं, और ऐसी इच्छा करके मैं पाप कर रहा हूं; क्योंकि परमेश्वर ने जो काम मेरी जिम्मेवारी पर छोड़ा है उसी से मुझे सन्तु ष्ट होना चाहिए ।'' 1

|v21

और फिर मैंने अलमा के विचारों में उस निर्देशन को पाया जिसके लिए मैं प्रार्थना कर रहा था :''क्योंकि देखो, हर एक राष्ट्र और भाषा के लोगों को, अपनी वाणी की शिक्षा और अपने ज्ञान के द्वारा, जो कुछ परमेश्वर देखता है कि उन्हें मिलने योग्य है, उन सबको देने के लिए उनके ही राष्ट्र अथवा भाषा के लोगों के द्वारा देता है; इसलिए हम देखते हैं कि परमेश्वर विवेकमय उपदेश देता है जो उचित और सत्य होता है ।''2

|v22

मैंने जब परमेश्वर के सेवक के इस संदेश को पढ़ा, मुझे आज क्या बोलना है स्पष्ट हो गया । परमेश्वर अपने बच्चों को संदेश और अधिकृत संदेशवाह क भेजता है । मुझे परमेश्वर और उसके सेवकों में इतना विश्वास पैदा करना है कि हम बाहर जाकर उसकी सलाह का पालन करेंगे । वह यह इसलिए चाहता है क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है और हमारी खुशी चाहता है । और वह जानता है कि कैसे उसमें विश्वास की कमी से दुख आता है ।

|v23

विश्वास की इसी कमी से स्वर्गीय पिता के बच्चों को इस संसार की रचना से पहले दुख मिला था । भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ को परमेश्वर के प्रकटीक रण द्वारा हम जानते हैं कि आत्मिक संसार में हमारे स्वर्गीय पिता और उसके सबसे बड़े बेटे, यहोवा द्वारा प्रस्तुत हमारे पार्थिव जीवन की योजना को हम ारे कई भाइयों और बहनों ने अस्वीकार कर दिया था ।3

|v24

हम उन सभी कारणों को नहीं जानते जिसकी वजह से लूसीफर उस विद्रोह को भड़काने में सफल हुआ था । फिर भी, एक कारण स्पष्ट है । जिन्हें पा ार्थव जीवन में आने की आशीष नहीं मिली उनमें अनन्त दुख से बचने के लिए परमेश्वर में पर्याप्त विश्वास की कमी थी ।

|v25

परमेश्वर में विश्वास की कमी का दुखत चलन सृष्टि की रचना से अब तक जारी है । परमेश्वर के बच्चों के जीवन में से उदाहरण देने में मैं सावधानी ब रतुंगा क्योंकि मैं परमेश्वर पर पर्याप्य विश्वास न रखने के सभी कारणों को नहीं जानता । आप में से बहुतेरों ने अपने जीवन की परेशानियों के क्षणों प र मनन किया होगा ।

|v26

उदाहरण के लिए, योना, ने नीनवे जाने की प्रभु की आज्ञा को न केवल ठुकराया था बल्कि वह विपरित दिशा को चला गया । नामान ने प्रभु के भविष यवक्ता के नदी में नहाने के निर्देश में विश्वास न करके प्रभु को उसका कोढ़ ठीक नहीं करने दिया था, उसने सोचा इतना साधारण कार्य करना उसके शान को कम करना था ।

|v27

उद्धारकर्ता ने पतरस को नाव की सुरक्षा को छोड़ पानी पर चलकर उसकी तरफ आने का निमंत्रण दिया था । हमें उसके लिए दुख होता है और जब ह म उस घटना के विषय में सुनते हैं तो हम परमेश्वर पर अधिक विश्वास की अपनी जरूरतों को जांचते हैं ः

|v28

‘‘और वे रात के चौथे पहर झील पर चलते हुए उनके पास आया ।

|v29

‘‘चेले उसको झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए, और कहने लगे, वह भूत है; और डर के मारे चिल्ला उठे ।

|v30

‘‘यीशु ने तुरन्त उन से बातें की, और कहा, ढाढस बान्धो; मैं हूं; डरो मत ।

|v31

‘‘पतरस ने उसको उत्तर दिया, हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे ।

|v32

‘‘उसने कहा, आ । तब पतरस नाव पर से उतरकर, यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा ।

|v33

‘‘पर हवा को देखकर डर गया, और जब डुबने लगा; तो चिल्ला कर कहा, हे प्रभु मुझे बचा ।

|v34

‘‘यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, और उससे कहा, हे अल्प विश्वासी, तूने क्यों सन्देह किया ?”4

|v35

हम इस सच्चाई से हिम्मत ले सकते हैं कि पतरस ने प्रभु के शहीद होने तक विश्वासपूर्वक उनकी सेवा की थी ।

|v36

मॉरमन की पुस्तक का नौजवान नफी हमें प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने की इच्छा के लिए प्रेरित करता है, बेशक वे कितनी ही कठीन क्यों न प्रत ीत होती हों । नफी ने खतरे और संभावित मौत का सामना किया था जब उसने विश्वास के इन शब्दों को कहा था जिन्हें हम अपने हृदयों में महसूस कर सकते हैं और हमें निंरतर महसूस करते रहना चाहिएः ‘‘और ऐसा हुआ कि मैं, नफी ने, अपने पिता से कहाः मैं जाऊंगा और वह काम करूंगा जि सकी आज्ञा प्रभु ने दी है, क्योंकि यह मैं जानता हूं कि प्रभु मनुष्य के बच्चों को, केवल उसी काम की आज्ञा देता है जिस काम को वह उनसे करवाना

चाहता है और जिसके लिए वह उन्हें तैयार करता है ।''5

|v37

यह विश्वास परमेश्वर को जानने से आता है । पृथ्वी पर किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक, सुसमाचार की पुनःस्थापना के महिमापूर्ण मौकों द्वारा, हमने उस शान्ति को महसूस किया है जो प्रभु अपने लोगों को इन शब्दों से देता हैः ''चुप हो जाओ, और जान लो, कि मैं ही परमेश्वर हूं ।''6
जो परमेश्वर ने अपने विषय में प्रकट किया है कि हम उस पर विश्वास कर सकें, इन सबसे मेरा हृदय आभार से भर गया है ।

|v38

मेरे लिए यह 1820 में न्यूयार्क प्रदेश के खलिहान के निकट उपवन में एक छोटे बालक से शुरू हुआ था । बालक, जोसफ स्मिथ जु., पूर्व निर्धारित स्थान पर गया । वह संपूर्ण विश्वास के साथ प्रार्थना करने के लिए घुटनों के बल झुका कि परमेश्वर उसकी याचना का जवाब देगा कि शुद्ध होने और यीशु मसीह के प्रायश्चित द्वारा बचाए जाने के लिए उसे क्या करना चाहिए । 7

|v39

हर बार जब मैं उसके विवरण को पढ़ता हूं, परमेश्वर और उसके सेवकों में मेरा विश्वास बढ़ता जाता हैः

|v40

''मैंने एक ज्योति के स्तम्भ को ठीक अपने सिर के ऊपर देखा, जिसका तेज सूर्य से अधिक चमकीला था, यह धीरे-धीरे मेरे ऊपर उतर रहा था, अन्तत यह मेरे ऊपर आकर ठहर गया ।

|v41

''ज्यों ही यह ज्योति प्रकट हुई तब मैंने अपने आपको उस शैतानी ताकत से मुक्त पाया जिसने मुझे बान्ध रखा था । जब यह प्रकाश मेरे ऊपर आकर ठहर गया मैंने दो लोगों को देखा, जिनका तेज और महिमा का बयान करना मुश्किल है, वे मेरे सामने हवा में खड़े हुए थे । उनमें से एक ने मुझसे बात की. मेरा नाम लेकर बुलाया, और दूसरे की ओर इशारा करते हुए कहा---*यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी सुनो !* "8

|v42

पिता ने हमें प्रकट किया था कि वह जीवित है, कि यीशु मसीह उसका प्रिय पुत्र है, और उसने हमसे इतना प्रेम किया कि हम, जोकि उसके बच्चे हैं, को बचाने के लिए उस पुत्र को भेजा । और क्योंकि मेरे पास गवाही है कि उसने उस अनपढ़ बालक को प्रेरित और भविष्यवक्ता नियुक्त किया, मैं आज उसके प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं और उन सब पर जिन्हें परमेश्वर की सेवा करने के लिए नियुक्त किया है, विश्वास करता हूं ।

|v43

उस विश्वास ने मेरे जीवन और मेरे परिवार के जीवन को आशीषित किया है । सालों पहले मैंने अध्यक्ष एज्रा टैफ्ट बेन्सन को आज की तरह रविवार सम्मेलन में बोलते हुए सुना था । उन्होंने कर्ज से मुक्त होने और इससे बचने की सलाह दी थी । उन्होंने गिरवी रखे घरों के बारे में बात की थी । उन्होंने कहा था कि हो सकता यह संभव न हो, लेकिन अच्छा होगा यदि हम अपने सारे कर्ज का भुगतान कर अपने घरों को गिरवी से मुक्त कर लें ।9

|v44

सभा के बाद मैंने अपनी पत्नी से बात की और पूछा, ''क्या तुम्हारे विचार से कोई तरीका है जिससे हम ऐसा कर सकते हैं ?'' तुरन्त हमें कुछ समझ

में नहीं आया। और फिर बाद में शाम तक मुझे उस संपत्ति का विचार आया जो हमारे पास अन्य राज्य में थी। कई सालों से हमने इसे बेचने के असफल प्रयास किए थे।

|v45

लेकिन क्योंकि हमने परमेश्वर और उसके सेवक के कुछ शब्दों पर विश्वास किया था, हमने सोमवार सुबह सैन फ्रांसिस्को में उस व्यक्ति को फोन किया जिसे हमने अपनी संपत्ति बेचने के लिए कहा था। कुछ हफ्ते पहले ही मैंने उससे बात की थी, और तब उसने कहा था, ''कई सालों से हमें ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला है जिसने आपकी संपत्ति में दिलचस्पी दिखाई हो।''

|v46

लेकिन उस सोमवार सम्मेलन के बाद, मुझे ऐसा जवाब मिला जो मुझे आज तक परमेश्वर और उसके सेवकों में विश्वास करने के लिए बल देता है।

|v47

फोन पर उस व्यक्ति ने कहा :''मैं आपके फोन से आश्चर्य में हूं। आज ही एक व्यक्ति आपकी संपत्ति को खरीदने की पूछताछ कर रहा था।'' मैंने उत्सुकता से पूछा, ''वह कितनी कीमत देने को तैयार है ?'' यह हमारी गिरवी की रकम से कुछ डॉलर अधिक थी।

|v48

कोई व्यक्ति कह सकता है कि यह केवल एक संयोग था। लेकिन हमारी गिरवी की रकम का भुगतान कर दिया गया था। और आज भी हमारा परिवार भविष्यवक्ता के संदेश में ऐसे शब्दों को सुनता है जो हो सकता है यह बताने के बोला गया हो कि परमेश्वर जो सुरक्षा और शान्ति हमें देना चाहता है उसे पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए।

|v49

परमेश्वर में इस प्रकार का विश्वास समाज के साथ परिवारों को भी आशीष दे सकता है। मैं न्यू जर्सी के एक छोटे से शहर में बड़ा हुआ था। गिरजाघर की हमरी शाखा में बीस से कुछ अधिक सदस्य थे जो नियमित रूप से गिरजाघर आते थे।

|v50

उनमें एक स्त्री थी---- गिरजाघर की बहुत विनम्र परिवर्तित, बुजुर्ग। वह एक प्रवासी थी जो भारी-भरकम नार्वे लहजे में बात करती थी। वह अपने परिवार की एकमात्र और जिस शहर से वह आई थी वहां की एकमात्र गिरजाघर की सदस्या थी।

|v51

मेरे पिता द्वारा, जो कि शाखा अध्यक्ष थे, प्रभु ने उसे शाखा में सहायता संस्था की अध्यक्षा नियुक्त किया था। उसके पास कोई निर्देश पुस्तिका नहीं थी जो उसे बताती कि उसे क्या करना था। गिरजाघर का कोई भी सदस्य उसके निकट नहीं रहता था। वह केवल इतना जानती थी कि जो जरुरतमंद हैं प्रभु उनका ध्यान रखता है और थोड़ा बहुत सहायता संस्था के उद्देश्य ''प्रेम कभी असफल नहीं होता'' जानती थी।

|v52

यह उन दिनों की बात है जिसे हम महान मंदी कहते हैं। हजारों बेरोजगार और बेघर हो गए थे। तो, यह महसूस करते हुए कि प्रभु ने उसे काम सौंपा है, उसने अपने पड़ोसियों से पुराने कपड़े देने के लिए कहा। उसने कपड़ों को धोया, उनपर स्त्री की, और अपने घर के पीछे गत्ते के डिब्बे में उन्हें रख दिया। जब निंधन लोगों को कपड़ों की जरूरत होती और अपने पड़ोसियों से मदद मांगते, तो वे कहते थे, ''गली के कोने पर जाओ, वहां एक मॉ

रमन स्त्री रहती है वह तुम्हारी जरूरत को पूरा करेगी ।''

|v53

प्रभु शहर का प्रशासन नहीं चला रहा था, लेकिन उसके कुछ हिस्से को अच्छाई के लिए बदल दिया था । उसने एक मामुली सी स्त्री को चुना--- जिस ने उस पर इतना विश्वास किया कि वह जानती थी कि प्रभु उससे क्या करवाना चाहता था और फिर उसने वैसा ही किया । प्रभु में उसके विश्वास के कारण, वह उस शहर में सैकड़ों परमेश्वर के जरुरतमंद बच्चों की मदद कर पाई थी ।

|v54

प्रभु में ऐसे ही विश्वास राष्ट्रों को आशीष दे सकता है । मुझे पता चला है कि अलमा के वायदे को पूरा करने के लिए हम परमेश्वर पर विश्वास कर स कते हैं कि, ''क्योंकि देखो, हर एक राष्ट्र और भाषा के लोगों को अपनी वाणी की शिक्षा और अपने ज्ञान के द्वारा जो कुछ परमेश्वर देखता है कि उन् हें मिलने योग्य है, उन सबको देने के लिए उनके ही राष्ट्र अथवा भाषा के लोगों के द्वारा देता है ।''10

|v55

परमेश्वर राष्ट्रों पर शासन नहीं करता, लेकिन उनका ध्यान रखता है । वह ऐसे लोगों को प्रभावशाली पद पर नियुक्त कर सकता है और करता है, जो जानते हैं कि लोगों के लिए और जो प्रभु में विश्वास करते हैं उनके लिए क्या उत्तम है ।11

|v56

दुनिया में अपनी यात्राओं के दौरान मैंने इसे देखा है । एक करोड़ से अधिक लोगों के एक शहर में मैंने एकत्रित हजारों अन्तिम-दिनों के सन्तों से सम्मे लन में बातें की थी । यह सभा खेल के एक बड़े मैदान में हुई थी ।

|v57

सभा शुरू होने से पहले, सामने पंक्ति में बैठे एक आकर्षक युवक पर मेरा ध्यान गया । उसके आस-पास अन्य लोग बैठे हुए थे, जो उसकी तरह थे, उन्होंने औरों के मुकाबले अच्छे कपड़े पहने हुए थे । मैंने गिरजाघर के जनरल अधिकारियों से उन लोगों के बारे में पूछा । उन्होंने धीरे से मेरे कान में क हा वह शहर का मेयर और उसके कर्मचारी थे ।

|v58

जब मैं सभा खत्म होने बाद अपनी कार की ओर जा रहा था, मुझे यह देखकर आर्श्चय हुआ कि मेयर अपने लोगों से घिरा हुआ खड़ा मेरा इन्तजार कर रहा था । उसने आगे बढ़कर अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाया और कहा, ''अपने शहर में और अपने देश में आने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं । जो कार्य आप अपने लोगों के विकास के लिए कर रहे हैं हम उसके आभारी हैं । ऐसे लोग और ऐसे परिवारों के साथ मिलकर, हम उस मेल-मिलाप और संपन्नता की रचना कर सकते हैं जो हम अपने लोगों के लिए चाहते हैं ।''

|v59

उसी क्षण मैं समझ गया कि वह उन ईमानदार लोगों में से एक था जिसे परमेश्वर ने अपने बच्चों पर शासन करने के लिए चुना था । उस बड़े शहर में हम बहुत कम संख्या में हैं । मेयर हमारे सिद्धान्तों के विषय में और हमारे लोगों के विषय में बहुत कम जानता था । फिर भी परमेश्वर ने उसे यह सं देश दिया कि अन्तिम-दिनों के सन्त, परमेश्वर और उसके अधिकृत सेवकों पर विश्वास करने के अनुबन्ध के साथ, उसके लोगों के लिए ज्योति बन सक ते हैं ।

|v60

मैं जानता हूं परमेश्वर के सेवक जो इस सम्मेलन के दौरान आपसे बात करेंगे । उन्हें परमेश्वर ने अपने बच्चों को संदेश देने के लिए नियुक्त किया है ।
प्रभु ने उनके विषय में कहा हैः "मुझ प्रभु ने जो कहा है, मैंने कह दिया, और अपनी कही बात से कभी पीछे नहीं हटता;
उसने कहा है स्वर्ग और पृथ्वी टल सकते हैं, परन्तु उसकी कही बात नहीं टलेगी लेकिन पूरी होगी, चाहे ये बात उसके अपने मुंह से कही जाए या उसके सेवकों के मुंह से, दोनों एक समान है ।"12

|v61

उसमें अपना विश्वास दिखाएं जब आप सीखने, पश्चाताप करने, की नियत से सुनते हैं और फिर जाकर वैसा करें जैसा करने के लिए उसने कहा है । यदि परमेश्वर को पर्याप्त विश्वास के साथ इस सम्मेलन में, उसके संदेश को प्रत्येक वार्ता में, गीत, और प्रार्थना में सुनते हैं, आप इसे पाएगें । और यदि फिर आप जाकर उसे करें जो उसने करने के लिए कहा है, उस पर विश्वास करने की आपकी शक्ति बढ़ेगी, और समय आने पर आप आभार के साथ यह जानकर आश्चर्यचकित होंगे कि वह आप पर विश्वास करने लगा है ।

|v62

मैं गवाही देता हूं कि वर्तमान में परमेश्वर, अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर के चुने हुए सेवकों द्वारा, बात करता है । थॉमस एस. मॉनसन परमेश्वर के भविष्यवक्ता हैं । हमारा स्वर्गीय पिता और उसका पुत्र, यीशु मसीह, जीवित हैं और हमसे प्रेम करते हैं । यीशु मसीह के नाम में मैं गवाही देता हूं , आमीन ।

|v63

विवरण

|v64

1.

|v65

अलमा 29:1—3 ।

|v66

2.

|v67

अलमा 29:8 ।

|v68

3.

|v69

देखें सिद्धान्त और अनुबन्ध 29:36–37; इब्राहीम 3:27–28।

|v70

4.

4.

|v71

मत्ती 14:25-31।

|v72

5.

|v73

1 नफी 3:7।

|v74

6.

|v75

भजन संहिता 46:10।

|v76

7.

|v77

देखें *Teachings of Presidents of the Church: Joseph Smith* (2007), 28।

|v78

8.

|v79

जोसफ स्मिथ---इतिहास 1:16-17 ।

|v80

9.

|v81

उदाहरण के लिए, देखें, एज़्रा टैफ्ट बेन्सन, “Prepare for the Days of Tribulation,” *Ensign* नवं. 1980, 33।

|v82

10.

|v83

अलमा 29:8 ।

|v84

11.

|v85

देखें 2 इतिहास 36:22--23; एज़्रा 1:1-3; यशायाह 45:1, 13 ।

|v86

12.

|v87

सिद्धान्त और अनुबन्ध 1:38 ।

|v88

लियाहोना

|v89

नवंबर 2010